International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0975-3486, (Print), E- ISSN- 2320-5482, Aug-Sept,2013 (Combind) VOL- IV * ISSUE – 47-48

शोध पत्र

सामाजिक परिवर्तन में युवाओं की भूमिका

Aug- Sept ,2013

* प्रो. रंजीता वास्केल ** डॉ. एच. एल. मरावी

* सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र ** सहायक प्राध्यापक वाणिज्य , शासकीय महाविद्यालय, हरसूद जिला खण्डवा (म.प्र.)

पूंजीवादीकरण से मानवीय संवेदनाओं का निरंतर परिवर्तित हुआ है। ,संयुक्त परिवारों का टूटना एवं पारिवारिक सामाजिक मूल्यों का निर्भरता से विभेद हुआ है। जिससे मानवीय मूल्यों में ह्रास हुआ है ,पूँजीवाद का बोलबाला का सामाजिक सरोकारों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। ,युवाओं का समाज से दूर भागना और सुख्यातित स्वयं के विकास के लिए और अपने एक पुष्टिकरण के लिए समाज का तिरस्कार कर युवा खुद को साबित करने में अपनी होड़ चाहता है, जिसके लिए वह बिना किसी परिणाम की परवाह किये बिना परिवार से दूर भाग रहा है और समाज में पारिवारिक अंतर्द्वंद को जन्म दे रहा है।

किसी समाज में परिवर्तन उसकी जीवंतता का प्रमाण होता है। समाज का परिवर्तनशील न होना जड़ समाज की संज्ञा का परिचायक होगा। जीवंत गतिशील समाज में सामाजिक सरोकारों के परिवर्तन की प्रक्रिया गतिमान रहते हुए समाज में उसके बाह्य और आंतरिक परिवर्तन लक्षित तभी होने लगता है जब कुछ नयापन दिखाई देने लगे । दूसरी ओर बाह्य परिवर्तन जब विवाह ,परिवार, वर्ग नातेदारी, जातीय संस्कार,समूहों के स्वरूपों में परिवर्तन हो तब संरचनात्मक या बाह्य परिवर्तन दिखाई देने लगता है।

सामाजिक बदलाव समाज की सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन को दर्शाता है। सामाजिक परिवर्तन का आधार मनुष्य में विचार प्रक्रिया में परिवर्तन है। यह सामाजिक प्रगति या सामाजिक सांस्कृतिक विकास,समाज द्वंद्वात्मक या विकासवादी माध्यम से आगे बढ़ता रहता है।मार्क्सवाद में प्रस्तुत समाजवादी क्रांति के रूप में समाजिक क्रांति को देखें तो पता चलता है कि सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक ,धार्मिक, आर्थिक ,वैज्ञानिक या तकनीकी बलों द्वारा संचालित किया जा सकता है जिसमें समाज के युवाओं की अधिकतम भागीदारी निहित होती है। भारतीय समाज में परिवर्तन के कई पहलू हैं जिनमें वैदिक काल से लेकर मुगल काल तथा अंग्रेजों के आगमन के बाद हुए सामाजिक परिवर्तनों को हम देख सकते हैं । स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत में सामाजिक परिवर्तनों का दौर सा चल पड़ा भारतीयों के आचार व्यवहार से लेकर जीवन शैली के आमूलचूल परिवर्तन से भारतीय समाज में युवाओं के सामाजिक सरोकारों में बदलाव परिलक्षित हुआ है ।

परिकल्पना –

- सामाजिक सरोकारों में युवा चेतना के प्रति सजग होना आवश्यक है ।
- युवा बदलते समय में जोश के साथ कार्य करने में सक्षम होते हैं ।
- वर्तमान समय में युवाओं की संख्या एवं उनसे संबंधित समस्याएं ज्यादा है।
- युवा सामाजिक परिवर्तनों को आवश्यक मानते हैं।

किसी भी देश की पूँजी उसके मानव संसाधन होता है तथा उस देश की बुनियाद युवा होते हैं युवा उर्जावान होते हैं ,सबसे अधिक संभावनाएं भी युवाओं में ही होती है। देश के विकास और ह्रास में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि युवा ऊर्जावान व प्रतिभावान होते हैं। भारत एक युवा देश है वैश्विक आंकडे बताते हैं कि जहॉं 2020 तक अमरीका में युवाओं की औसत आयु 45 वर्ष होगी चीन की 37 वर्ष पश्चिमी यूरोप और जापान की 48 वर्ष होगी ,वहीं भारत में युवाओं की औसत आयु 29 वर्ष होगी। ऐसे में यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आज सम्पूर्ण विश्व की निगाहें भारत के कौशलयुक्त युवाओं की ओर हुई है ।

युवाओं के आधार पर भारत ने अपनी परंम्परागत छवि का आवरण उतारकर नई पहचान बनाई है ,देश से लेकर वैश्विक स्तर पर होने वाले सामाजिक परिवर्तनों में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । आर्थिक सुधारों से लेकर राजनीति खेल और व्यवस्था परिवर्तन के आंदोलनों ,सबमें युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है जिसका जीता जागता उदाहरण है अरब देशों में हुए व्यवस्था परिवर्तन के आंदोलन ,अमेरिका में वालस्ट्रीट आंदोलन और भारत में हुए जे पी आंदोलन से लेकर 21 वीं सदी में हुए अन्नाहजारे का आंदोलन और दामिनि के साथ हुए अमानवीय व्यवहार के विरूद्ध आक्रोश के रूप में दरअसल आज का युवा संक्रमण के दौर से गुजर रहा है । परिवेश ऐसा निर्मित हो चुका है कि आज का युवा प्रतियोगिता के जाल में बाजारी अर्थव्यवस्था में उलझ गया है।

आज का युवा भ्रम और यथार्थ के बीच फॅस चुका है ,यह समय पूँजीवाद के चरम उत्कर्ष का समय हैं जहॉं आधुनिकता के नाम पर पुराने मूल्यों को अनदेखा करके बाजार हर दिन नया मूल्य तय कर रहा है जिसमें मनुष्य समाज में क्रयशील प्राणी बन गया है। राजनीति, सामाजिक , सास्कृतिक , बाजार,शैक्षिक व्यवस्था,आर्थिक नीतियॉं सिनेमा,साहित्य इंण्टरनेट का प्रयोग आदि अनेक पहलू हैं जिनमें युवाओं में हो रहे परिवर्तनगामी स्वरुप

को पहचाना जा सकता है।

युवाओं के संबंध में कहा जाता है कि उनमें पाया जाता है –

- आत्मविश्वास – जिनका स्वयं पर भरोसा होता है, वे कुछ कर गुजरने में सक्षम होते हैं। इमर्सन ने इसी लिए कहा है –आत्मविश्वास सफलता का प्रथम रहस्य हैं।
- संकल्प – संकल्प वह होता है जिसका कोई विकल्प नहीं होता । लक्ष्य प्राप्ति में युवा संकल्पित होकर कार्य करने में विकल्प नहीं खोजते।
- समर्पण –लक्ष्य के लिए अपना सर्वस्व समर्पण भाव से कार्य जुट जाते हैं।
- साहस – साहस ही युवाओं को निर्भय बनाता है और जहाँ निर्भयता होती है वहीं जीवन अपनी पूर्ण अभिव्यक्ति कर सकता है ।
- परिस्थिति के अनुरूप मनः स्थिति का निर्माण – युवाओं में समय के अनुकूल अपने मनः स्थिति को ढाल लेने की क्षमता होती है।

21वीं सदी परिवर्तन की सदी है । सामाजिक रूप से क्रांतिकारी परिवर्तन का युग है,युवाओं में सामाजिक परिवर्तन की बानगी जो देखने में मिलते हैं जैसे चलचित्रों में मल्टीप्लेक्स,आर्थिकता में उपभोक्तावादी या एफ डी का सांस्कृतिक रूप में पब संस्कृति ,शैक्षणिक रूप में आई आई टी का और आभासी दुनिया का युग के रूप में निहित है।

सबसे ज्यादा समाज में परिवर्तन सूचना तकनीक ने किया है जिसमें सोशल मीडिया और इण्टरनेट की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । यह समाज नित्य परिवर्तनगामी है । ऐसा समय निश्चित ही चुनौतीपूर्ण तो है ही साथ ही आत्ममंथन का भी विषय है जिसमें युवाओं की भूमिका की पहचान करना एक महत्वपूर्ण कार्य है।

सामाजिक सरोकारों से मतलब रखने वाले युवा आज तीन तरह से बँट चुके हैं एक भाग सत्ता एवं सरकार में रहकर अपनी भागीदारी के साथ समाज में परिवर्तन चाहता है तो दूसरा भाग सत्ता के बाहर विरोधी खेमा बनकर समाज में पैरवी कर रहा है वहीं तीसरा भाग या तो तटस्थ रहकर सामाजिक सरोकारों में भूमिका अदा कर रहा है या आर्थिक मजबूती के बल पर समाज में अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहा है। विभिन्न अवसरों में जब कहीं टकराव की स्थिति होती है तब इन सबके अवधारणाओं को जब तक समाज समझता है तब तक कोई एक खेमा अपना लक्ष्य पूर्ण कर चुका होता है । जिससे समाज में कुछ बदलाव तो आता ही है साथ ही समाज के कुछ भाग में मानवीयता की बलि भी चढ जाती है ▌

भूतकाल में देखने से भी मिलता है कि जब जब युवाओं ने किसी समस्या को लेकर आत्मचिंतन प्रारंभ किया है नई चेतना जागृत हुई हैं, कोई न कोई सामाजिक आंदोलन का सूत्रपात हुआ है और परिवर्तन हुआ है। इतना सब जानते हुए सामाजिक विकृतियॉ भी समाज में व्याप्त हो जाती हैं समाज के कार्यों में अपना दायित्व निर्वाह करते करते गलत निर्देशन पर यही युवा विभिन्न मोर्चा तैयार कर लेते हैं। वर्तमान में हम पाते हैं कि समाज के हर उस वर्ग में जो समाज के प्रति जवाबदेह है किसी न किसी मोर्चा के साथ खड़ा है और परिवर्ततनों के साथ सुधारों की बाट जोह रहा है।

भूमंडलीकरण से मानवीय संवेदनाओं का विध्वंश परिलक्षित हुआ है। ,संयुक्त परिवारों का टूटना एवं पारिवारिक सामाजिक मूल्यों का निर्ममता से विध्वंश हुआ है। जिससे मानवीय मूल्यों में ह्रास हुआ है ।,पूँजीवाद का बोलबाला का सामाजिक सरोकारों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। युवाओं का समाज से दूर भागना और युवाशक्ति का स्वयं के विकास के लिए और अपने स्व तुष्टिकरण के लिए समाज का तिरष्कार कर युवा खुद को साबित करने में अग्रणी रहना चाहता है। बिना किसी परिणाम की परवाह किये बिना परिवार से दूर भाग रहा है और समाज में पारिवारिक अंर्न्तद्वंद को जन्म दे रहा है।

आज समाज में युवाओं के नकारात्मक स्वरूप का ही ज्यादा प्रचार है वास्तव में युवाओं पर परम्पराभंजक मनमौजी पीढ़ी अवसरवादी आदि होने का आरोप लगाया जाता है । लेकिन आरोप लगाने से पूर्व हमें भूत काल में जाकर उनके पीछे के सामाजिक और राजनीतिक कारणों के साथ समाज में हो रहे बदलावों को जानना होगा तभी हम किसी सार्थक बिन्दु पर पहुँच सकते हैं, जिसके लिए युग की मीमांसा को जानना आवश्यक होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. चंद्रा नरेश समाजशास्त्र, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन 2007 नई दिल्ली।
2. वर्मा पवन कुमार मध्यमवर्ग की दास्तान, राजकमल प्रकाशन 1999 नई दिल्ली ।
3. श्रीनिवास एम एन आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन राजकमल प्रकाशन 2011 नई दिल्ली ।
4. शर्मा के एल भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन रावत पब्लिकेशन 2010 नई दिल्ली
5. शाह घनश्याम भारत में सामाजिक आंदोलन , रावत पब्लिकेशन 2009 नई दिल्ली